श्री रत्नत्रय मंडल विधान अर्घ एवं पूजा

"सम्यग्दर्शन, ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग:" अर्थात सम्यकदर्शन, ज्ञान व चारित्र इन तीनों की एकता ही मोक्ष मार्ग है। ये तीनो रत्न अनुपम व सर्वश्रेष्ठ है इसलिये इन्हें रत्नत्रय कहते हैं। इस मंडल विधान में सम्यकदर्शन के ५० अर्घ, सम्यकज्ञान के ६७ और सम्यक चारित्र के १५० अर्घ है।

रत्नत्रय, दर्शनज्ञान व चारित्र पूजा

ये पर्व वर्ष में तीन समय मनाये जाते हैं।

१. भाद्रपद सुदी तेरस से आश्विन वदी प्रतिपदा तक
२. माघ सुदी तेरस से फाल्गुन वदी प्रतिपदा तक
३. चैत्र सुदी तेरस से वैसाख वदी प्रतिपदा तक

रत्नत्रय का अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लिये।
जन्म रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदशप्रकारसम्यक चारित्रायऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री रत्नत्रय पूजा

दोहा:- चहुँगति-फणि-विष-हरन-मणि,दुख-पावक-जल-धार।
शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक-त्रयी निहार।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रय धर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रय धर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रय धर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा:- क्षीरोदधि उनहार, उज्जवल जल अति सोहनो।
जनम-रोग निरवार, सम्यक-रत्न-त्रय भजूं।।

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।। १ ।।

चंदनं-केशर गारि, परिमल-महा-सुगंध-मय।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।। २ ।।

तंदुल अमल चितार, वासमती-सुखदासके।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्राय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।। ३ ।।

महकै फूल अपार, अलि गूंजै ज्यों थुति करें।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।। ४ ।।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुंगंध युत।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५ ।।

दीप रतन मय सार, जोत प्रकाशे जगत में।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।। ६ ।।

धूप सुवास विंथार, चंदन अगर कपूर की।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।। ७ ।।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय मोक्षपद प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।। ८ ।।

आठ दरब निरधार, उत्तमसो उत्तम लिये।। जन्म...

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय अन्र्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। ९ ।।

सम्यक दरशन ज्ञान, व्रत शिव-मग-तीनों मयी।
पार उतारन यान, ग्यानत, पूजों व्रतसहित।।

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन पूजा

दोहा :- सिद्ध अष्ट गुनमय प्रकट मुक्त-जीव-सोपान।
ज्ञान चरित जिहँ बिन अफल, सम्यकदर्शन प्रधान।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा :- नीर सुगन्ध अपार, हरै हरै मल छय करै।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।। सम्य...

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जल केशर धनसार, ताप हरै शीतल करै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अछत अनूप निहार, दारिद्र नाशै सुख भरै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

दीप-ज्योति तम-हार, घट पट परकाशै महा।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप ध्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव-फल करै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

आप आप निहचै लखै तत्व-प्रीति व्योहार।
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुनसार।।१।।

सम्यकदरशन-रत्न गहीजै। जिन-वच में सन्देह न कीजै।
इह भव विभव-चाह दुखदानी। पर-भव भोग चहैं मत प्राणी।।

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरु प्रभु परखिये।
पर-दोष ढ़किये धरम डिंगते को, सुथिर कर हरखिये।।
चउ संघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना।
गुण आठसों गुण आठ लहिकै, इहां फेर न आवना।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसहितपंचविंशति दोषरहित सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान पूजा

दोहा : पंचभेद जाके प्रकट, ज्ञेय-प्रकाशन-भान
मोह-तपन-हर-चंद्रमा, सोई, सम्यकज्ञान।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा : नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल क्षय करै।
सम्यकज्ञान विचार, आठ-भेद पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।। १ ।।

जल केशर धनसार, ताप हरै शीतल करै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।। २ ।।

अक्षत अनूप निहार, दारिद्र नाशै सुख भरै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय अक्षतां निर्वपामीति स्वाहा।। ३ ।।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरे मन शुचि करै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।। ४ ।।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरे थिरता करैं।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५ ।।

दीप-ज्योति तम-हार, घटपट परकाशै महा।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।। ६ ।।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।। ७ ।।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव फल करै।। सम्य...

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।। ८ ।।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।।

ॐ ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। १ ।।

जयमाला :आप आप जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार।।१।।

सम्यकज्ञान-रतन मन भाया आगम तीजा नैन बताया।
अच्छर शुद्ध अरथ पहिचानौं, अच्छर अरथ उभय संग जानौ।।
जानौ सुकाल-पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाईये।
तप-रीति गहि बहु मौन देके, विनयगुन चित लाइये।।
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान दर्पन देखना।
इस ज्ञानहीसों भरत सीझा, और सब पट देखना।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

सम्यक्चारित्र पूजा

दोहा : विषय रोग औषधि महा, दव कषाय जलधार।
तीर्थंकर जाकों धरैं, सम्यकचारितसार।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट्।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट्।

सोरठा : नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यकचारित सार, तेरह विधि पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जलकेशर धनसार, ताप हरै शीतल करैं।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अछत अनूप निहार दारिद्र, नाशै सुख भरै।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षयप्रद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।। ३ ।।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करैं।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरे थिरता करैं।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

दीप-ज्योति तम-हार, घट पट परकाशै महा।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव फल करै।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।। सम्यक...

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

जयमाला : आप आप थिर नियत नय, तप संयम व्योहार।
स्वपर - दया - दोनों लिये, तेरहविध दुख - हार।।१।।

सम्यकचारित रतन सम्भालो, पंच पाप तजिके व्रत पालौ।
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै, नर-भव सफल करहु तन छीजै।
छीजै सदा तन को जतन यह, एक संयम पालिये।
बहु रुल्यो नरक निगोद-माहीं, कषाय-विषयनि टालिये।।
शुभ-करम-जोग सुघाट आयो, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिव-पुरी कुशलात है।।२।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा : सम्यकदरशन-ज्ञान-व्रत, इन बिन मुक्ति न होय।
अन्ध पंग अरु आलसी, जुदे जलै दव-लोय।।१।।

चौपाई : जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करम-बन्ध कट जावै।
तासौ शिव-तिय प्रीति बढ़वै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।।२।।
ताकौ चहुँगति के दुख नाहीं, सो न परै भव-सागर माहीं।
जन्म-जरा मृत दोष मिटावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।।३।।
सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलह कारण आराधै।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।।४।।
सोई शक्र-चक्रिपद लेइ, तीन लोक के सुख बिलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।।५।।
सोध लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विस्तारै।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै।।६।।
एक स्वरूप-प्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय।।७।।

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।